Brandeis | LIBRARY
brandeis.edu/j-caste

CASTE: A Global Journal on Social Exclusion
Vol. 1, No. 2, pp. 183–186
October 2020
ISSN 2639-4928

**DOI: 10.26812/caste.v1i2.224**

# Blackhole

Gaurav J. Pathania[1]

A blackhole;
An attraction fatale.
It swallows planets and stars;
Even light is dispelled in its dark.

Every morning thousands of men,
Armed with ropes and a staff,
Like space explorers, descend into the dark
Of a manhole more horrendous than the blackhole,
And emerge as news or reports:
'More than 2000 people die cleaning manholes every year.'

For centuries, the pull of this blackhole of caste
Has slowed down the pace of our light of knowledge.
We've understood the universe and theories of relativity,
But have been unable to unravel the layout of our cities and streets
We've forgotten the blackholes underneath.

In the globalization race–villages and towns - rush towards cities
Filling its water channels, drains, gutters and sewers
With grease and filth, grime and slime.
Into this poisonous gas chamber infested with insects and parasites,
Wades a human body neck-deep in pitch black sludge
Amidst stink that could stub out life in a single breath.
Think, if you were to descend into this blackhole,
bare-footed, bare bodied;
All your purity, knowledge, vermillion and thread
would disintegrate in the blink of an eye.

[1]Department of Sociology, Georgetown University, Washington DC
E-mail: jogijnu@gmail.com

© 2020 Gaurav J. Pathania. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author(s) and source are credited.

I asked a old man, scraping in a blackhole, searching for his future,
"Uncle, The world has reached the moon, why are you still down there?"
He answered "Son, life has become a moonless night in this hell,
When I look up from here, the moon seems like a manhole from here."

Year after year, people from this manhole have gazed at the sky,
Waiting for a messiah who would pull them out of this abyss.
"Mahatmas have come and mahatmas have gone, but the untouchables have remained as untouchables."
The day these wise words of Dr. Ambedkar
Reaches to the men stuck in the blackhole
There will be a temblor, which in its wake will destroy
Your hollow claims of development, caste, lineage, holiness
and deal a massive blow to your education system, engineers and planners
Who, even in the 21st century, could not transform this manhole into a machine hole.

--

This poem was originally written in Hindi.
The author is grateful to his friend Akshay B. Singh and Dr. Meenu Bhaskar for the English translation, and the reviewers for their comments.

**Gaurav J. Pathania** is a sociologist and teaches at the Department of Sociology in Georgetown University, Washington DC. He authored his first book *The University as a Site of Resistance: Identity and Student Politics* with Oxford University Press in 2018. Pathania is an anti-caste poet. The Poetry Society of India honoured him with the national award in 2016-2017.

# "ब्लैकहोल"

ब्लैकहोल,
एक ऐसी जगह
जहाँ गुरुत्वाकर्षण इतना ख़ौफ़नाक
कि जो विशालकाय ग्रहों और सितारों को भी निगल जाए
यहाँ तक कि प्रकाश भी एक बार इसकी चपेट में आये
तो बाहर का रास्ता खोज़ते–खोज़ते ज़ाया हो जाए।

हर सुबह हज़ारों लोग
काँधे पर एक रस्सी लटकाये और हाथ में एक डंडी लिए निकल पड़ते हैं
अंतरिक्ष यात्री की तरह उतर जाते हैं
इस ब्लैकहोल से भी ज़्यादा ख़तरनाक उस मैनहोल में
और बाहर निकलते हैं या तो एक ख़बर बनकर या रिपोर्ट बनकर
कि "मैनहोल में सफाई करते हुए हर साल 2000 से भी ज़्यादा लोग दम तोड़ देते हैं।"

सदियों से जाति के इस गुरुत्वाकर्शण ने
ज्ञान रुपी प्रकाश की गति इतनी धीमी कर दी है
कि अपने ही घर और मोहल्लों के नीचे का खगोल–शास्त्र नहीं पढ़ पा रहें हैं
"रिलेटिविटी" के सिद्धांत से ब्रह्मांड तो समझ लिया
पर ज़मीन के नीचे के ब्लैकहोल भूल गए।
वैश्वीकरण की दौड़ में शहरों की ओर भागते लोग, गाँव और कस्बे,
शहर के सारे जल–मार्ग, मल–मार्ग, मवाद, अवसाद, और गंदगी वाले
गैसिले, ज़हरीले और सियाह काले हो चुके पानी में
गंदे कीड़े–मकौड़ों और जानवरों के बीच
गर्दन तक डूबा शरीर
बदबू इतनी कि एक साँस में दिमाग ब्लैक–आउट हो जाए।
सोचो अगर तुम्हे
नंगे पैर, नंगे बदन इस ब्लैकहोल में उतरना पड़े
तो तुम्हारी सारी पवित्रता, सारी पंडिताई, तार–तार हो जाए
ब्लैकहोल में अपना भविष्य ख़ूरच रहे एक चाचा से मैंने पूछा:
चचा सुने हो, दुनिया चंद्रयान से चाँद पर पहुँच चुकी है, और आप अभी तक यहाँ?
चचा बोले बेटा, इस नर्क़ में रहते रहते अब तो जीवन एक अमावस सा लगता है
मैं यहाँ से ऊपर देखता हूँ, तो चाँद मैनहोल सा लगता है।

मैनहोल के भीतर से आसमान की ओर देखते ये लोग
बरसों से इंतजार कर रहे है
कि कोई मसीहा, कोई महात्मा आएगा और
खींच निकालेगा उन्हें इस नर्क़ से बाहर
"कितने महात्मा आए और कितने महात्मा चले गये, लेकिन अछूत अछूत ही रहे"
डॉक्टर अंबेडकर की कही ये बात
जिस दिन इस ब्लैक होल में फँसे आदमी तक पहुँच गयी
उस दिन एक ऐसा ज़लज़ला आएगा
और बहा ले जायेगा तुम्हारा काग़ज़ी विकास, तुम्हारी जाति और तुम्हारी राजनीति
और स्वाहा कर देगा तुम्हारा सारा शिक्षा तंत्र
सारे इंजीनियर, प्लानर्स और सारे विकास पुरुष
जो आज तक, 21वीं सदी में भी
इन मैनहोल को मशीनहोल में नहीं बदल पाए ।

*गौरव जोगी पठानिया, जॉर्जटाउन यूनिवर्सिटी (वॉशिंगटन डीसी) में समाजशास्त्र पढ़ाते है। हाल ही में उनकी पहली पुस्तक "यूनिवर्सिटी एज ए साइट ऑफ रेसिसटेंस आयडेंटिटी एंड स्टूडेंट पॉलिटिक्स" ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से प्रकाशित हुई है । उनकी कविताएँ जातीय भेदभाव के खिलाफ आवाज बुलंद करती है। पोयट्री सोसाइटी ऑफ इंडिया ने उन्हें २०१६–१७ के राट्रीय पुरस्कार के लिए नवाजा है।*